बछेडा

दिन-दहाडे, हरी मक्खियो से ढके लीद के ढेर के पास, अगली टागो को पसारे, सिर के बल वह अपनी मा की कोख से निकला। जन्म लेते ही उसे किरच गोले के विस्फोट का नीला-सुरमई पुज दिखायी पडा। धमाके ने उसकी नम काया को मा की टागो के बीच पटक दिया। सत्रास – यहा, धरती पर यही उसकी प्रथम अनुभूति थी। अस्तबल की खपरैलवाली छत और जमीन पर ओलो की तरह, बदबूदार छर्रे बरसे। बछेडे की मा – त्रोफीम की लाखी घोडी – डर के मारे फुदकी और फिर हिनहिनाकर उसने पसीने से तर अपनी बगल को लीद के सुरक्षादायी ढेर पर टिका दिया।

तपिश भरी नीरवता मे मक्खियो की भिनभिनाहट साफ सुनायी पड रही थी। तोप की गोलाबारी के डर मे कही घनी घास मे दुबके मुर्गे ने डैने फडफडाकर, निसकोच परतु फटे-फटे स्वर मे बाग दी। घर के भीतर से घायल मशीनगनर का करुण क्रदन सुनायी पड रहा था। कभी-कभी वह तीखे, फटे स्वर मे चिल्लाता, बीच-बीच मे चुन-चुनकर गालिया जड देता। फुलवारी मे पोस्त के सिदूरी मखमली फूलो पर मधुमक्खिया गुजार कर रही थी। गाव के बाहर मैदान मे मशीनगन दनादन गोलिया बरसा रही थी, उसकी उत्साहवर्द्धक तड-तड की पृष्ठभूमि मे, पहले और दूसरे गोले के बीच के अतराल मे लाखी घोडी ने ममता के साथ अपने नवजात शावक को चाटा। मा के फूले थन से चिपककर उसे पहली बार जीवन के आनद और मा के स्नेह की अनत मिठास की अनुभूति हुई।

जब खलिहान के पीछे कही गिरकर दूसरा गोला फटा, त्रोफीम भडाक से मकान का दरवाजा खोलकर निकला और अस्तबल की ओर चल पडा। लीद के ढेर मे बचता हुआ वह धूप की चौध के कारण आखो के ऊपर हथेली का छज्जा बनाकर चल रहा था। यह देखकर

कि तनाव से फुदकता बछेड़ा उसकी घोड़ी का थन चूस रहा है वह सकपका गया, उसने जेबों में हाथ डाला और कांपती उंगलियों से तंबाकू की थैली निकाली, काग़ज़ में तंबाकू लपेटकर उसने सिगरेट बनायी और उसकी बोलती लौट आयी:

"आ... हा... मतलब ब्याह गयी? तू ने भी खूब वक़्त चुना इसके लिये।" त्रोफ़ीम के इस वाक्य में कटु निराशा का भाव झलका।

घोड़ी की पसीना सूखने से खुरदरी हुई बग़लों पर घास के तिनके और सूखी लीद चिपकी हुई थी। वह बेहद दुबली लग रही थी पर आखों मे थकान मिश्रित गर्वोल्लास टपक रहा था और ऊपरवाले मखमली होंठ पर मुस्कान फैली थी। कम से कम त्रोफ़ीम को तो यही लगा। त्रोफ़ीम ने घोड़ी को अस्तबल में बांध दिया, गर्दन पर टंगे अनाज के झोले को हिलाते हुए वह फुफकारी। चौखट से टिककर त्रोफीम ने बछेड़े की ओर तिरछी नज़र डाली और सख्त आवाज़ में पूछा:

"उड़ा ली मौज?"

उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना वह बोला:

"कम मे कम इग्नात के घोडे जैसा ही जनती, शैतान जाने किस पर गया है... बना तो सही, मैं इसका करूं क्या?"

अस्तबल की अंधकारमय नीरवता में अनाज चबने की आवाज़ आ रही थी, दरवाज़े में धूप की तिरछी सुनहरी किरणों का पुंज चमक रहा था। प्रकाश त्रोफ़ीम के बायें गाल पर पड़ रहा था, उसकी ललछौंही मूंछ और दाढ़ी के बाल चमक रहे थे, मुंह को घेरे झुर्रियां टेढ़ी-मेढ़ी काली खाइयों की तरह लग रही थी। बछेड़ा तिनके जैसी पतली टागों पर काठ के घोड़े की तरह खड़ा था।

"मार दूं इसे?" तंबाकू मसलने के कारण हरे अंगूठे से बछेड़े की ओर इशारा करके त्रोफ़ीम बोला।

घोडी पलक झपकती, अपनी लाल आंखों से मालिक की ओर उपहासपूर्ण नज़र मे देख रही थी।

* * *

स्क्वाड्रन कमांडर के कमरे में उस दिन शाम को निम्न वार्तालाप हुआ:

"मैने गौर किया कि मेरी घोडी बडी सभलकर चलने लगी, सरपट नही दौडती, सास फूलने लगता उसका। ध्यान से देखा तो वह ग्याभन निकली इतनी सभलकर रहती कि पूछो मत बछेडा तो कुम्मैत है बस " त्रोफीम बता रहा था।

स्क्वाड्रन कमाडर ताबे का मग मुट्ठी मे कसकर थामे चाय पी रहा था। उसने मग को ऐसे पकड रखा था जैसे कि हमला बोलने मे पहले तलवार की मूठ को पकडे हो। वह उनीदी आखो से लैम्प को ताक रहा था। आग की पीली-सी लौ पर पतगे मडरा रहे थे, वे खिडकी से अदर आते, गर्म चिमनी मे झुलमकर गिर जाते और दूसरे उनका स्थान ले लेते।

" क्या फर्क पडता है, चाहे भूरा हो या काला। गोली मार देनी चाहिये। बछेडे के साथ तो हम बजारो की तरह लगेगे।"

'क्या? हा, मै भी तो कहता हू कि बजारो की तरह लगेगे। अगर सेना कमाडर आये तब? रेजिमेट का निरीक्षण करने आयेगे और वह परेड के वक्त दुम हिलाता कुत्ताचे भरेगा तब? सारी लाल सेना के सामने हमारी नाक कट जायेगी। समझ नही आता त्रोफीम, तुमने यह होने कैसे दिया? गृह-युद्ध जोगो पर है इधर ऐसी भौडी हरकते यह तो बडी शर्म की बात है। साईसो को मेरा कडा हुक्म घोडो को घोडियो मे अलग रखो।"

सुबह त्रोफीम रायफल लिये घर से बाहर निकला। सूरज अभी उगा नही था। घास पर गुलाबी ओस बिछी थी। पैदल सेना के बूटो से कुचला खदको से पटा मैदान – दुख की पीडा से व्याकुल युवती के चेहरे की तरह लग रहा था। कैन्टीन मे बावर्ची अपने काम मे व्यस्त थे। स्क्वाड्रन कमाडर पसीने से गला पुराना बनियान पहने ड्योढी पर बैठा था। रिवाल्वर की मूठ की उत्साहवर्द्धक ठडक की अभ्यस्त हो चुकी उगलिया फुहड ढग से भूले-बिसरे, प्रिय काम को याद करते हुए बेत की पौनी बुन रही थी। पास से गुजरते हुए त्रोफीम ने कौतूहल के साथ पूछा

"पौनी बना रहे है?"

स्क्वाड्रन कमाडर ने पतली टहनी से हत्थी को जोडा और दात भीचकर बुदबुदाया

"अरे, मकान मालकिन जो है न कहती रहती है बना दो,

बना दो। एक जमाने मे इस काम का माहिर था, अब वह बात नही रही ढग की नही बनी।"

"नही, बढिया है," त्रोफीम ने प्रशमा की।

स्क्वाड्रन कमाडर ने घुटनो से छीलन को झाडते हुए पूछा

"बछेडे का काम तमाम करने जा रहे हो?"

त्रोफीम चुपचाप हाथ हिलाकर अस्तबल मे चला गया।

स्क्वाड्रन कमाडर सिर झुकाये गोली चलने की प्रतीक्षा करने लगा। एक के बाद एक पल बीतते जा रहे थे, पर गोली चलने की आवाज नही सुनायी दी। अस्तबल के पीछे मे त्रोफीम प्रकट हुआ, वह झेपा-झेपा-सा लग रहा था।

"क्यो, क्या हुआ?"

"लगता है रायफल मे कुछ गडबडी है टोपी पर हथौडा नही पड रहा।"

"जरा दिखाना, रायफल।'

त्रोफीम ने अनिच्छा के साथ दी। बोल्ट हटाकर स्क्वाड्रन कमाडर ने आखे मिचमिचायी।

"अरे, इसमे तो गोली ही नही है! "

"कैसे नही है! " त्रोफीम चिहुककर बोला।

"मै कह रहा हू, नही है।"

अरे हा, मैने तो उन्हे वहा अस्तबल के पीछे फेक दिया "

स्क्वाड्रन कमाडर ने रायफल को बगल मे रख दिया और बडी देर तक हाथ मे नयी पौनी को उलट-पलटकर निहारता रहा। बेत की ताजी चिपचिपी टहनिया मधुर सुगध फैला रही थी, नथुनो मे खिलते बेद-मजनू की गध भर रही थी, युद्ध की अनत आग मे विस्मृत श्रम की, धरती की सुगध आ रही थी।

"सुनो! जाने दो! रहने दो उसे अभी अपनी मा के साथ। बाद मे देखा जायेगा। लडाई खत्म हो जायेगी खेत जोतने के काम आयेगा। सेनापति अगर आये तो उसकी मजबूरी को समझ लेगे– दुधमुहा है तो मा का थन चूसेगा ही सेनापति ने भी चूची चूसी थी, हमने भी चूसी, आखिर जब रीत ही ऐसी है तो बात खत्म! और, हा, तुम्हारी रायफल मे कोई खराबी नही है।"

* * *

कोई एक महीने बाद एक दिन त्रोफीम के स्क्वाड्रन की उम्त-खोप्येस्की कस्बे के पास कज्जाक रिसाले से मुठभेड हो गयी। दिन ढलने से पहले गोलीबारी शुरू हो गयी। जब उन्होने हल्ला बोला साझ का झुटपुटा छाने लगा था। त्रोफीम अपने प्लाटून से बहुत पीछे छूट गया। घोडी पर न कोडे का और न ही एडो का कोई असर हो रहा था, वह सरपट नही दौडी। वह एक ही स्थान पर सिर उठाकर हिनहिनाती घूमने लगी जब तक कि दुम उठाये उसका बछेडा पास न आ गया। त्रोफीम कूदकर उतर गया, तलवार को म्यान मे ठूसकर उसने गुस्से मे कधे से रायफल उतारी। दाया पक्ष श्वेत सैनिको से भिड गया था। खड्ड के पास घुडसवारो का झुड उमड रहा था, मानो हवा के झोके उसे दाये-बाये उडा रहे हो। चुपचाप मार-काट हो रही थी। घोडो के खुरो से जमीन काप रही थी। त्रोफीम ने उस ओर एक नजर डालकर बछेडे के सिर का निशाना बाधा। न जाने गुस्से म हाथ काप गया या निशाना चूकने का कोई और कारण था, जो भी हो, पर गोली चलने के बाद बछेडे ने कुलाच भरी और खुरो से सफेद धूल उडाता कुछ दूरी पर जा खडा हुआ। त्रोफीम ने शैतान की औलाद पर साधारण नही, ताबे की लाल नोकोवाली बख्तरभेदी गोलियो की पूरी मैगजीन खाली कर डाली, जब उसे यकीन हो गया कि बख्तर भेदी गोलियो तक मे (जो सयोग से थैले मे से उसके हाथ मे आ गयी थी) लाखी घोडी की औलाद का बाल बाका नही हुआ, तो वह घोडी पर सवार हो गया, और कोसता हुआ दुलकी चाल से उस ओर चल पडा, जहा लाल चेहरोवाले दढियल स्क्वाड्रन कमाडर और तीन लाल सैनिको को खड्ड की ओर खदेड रहे थे।

उस रात स्क्वाड्रन ने एक छोटे-से खड्ड के पास पडाव डाला। सिगरेटे कम पी। घोडो पर जीने कसी हुई थी। दोन के तट से लौटे टोही दल ने बताया कि नदी पार करने के स्थान पर शत्रु का भारी जमाव है।

त्रोफीम पैरो को रबड की बरसाती मे लपेटे लेटा था। उनीद मे वह दिन भर की घटनाओ को याद कर रहा था। उसकी आखो के सामने खड्ड मे कूदते स्क्वाड्रन कमाडर, कमिसार पर तलवार से वार

करते पोपले मुहवाले दढियल का लाल चेहरा, एक कज्जाक का क्षत-विक्षत शरीर, काले खून से तर किसी की जीन और बछेडा घूम रहे थे।

पौ फटने से पहले स्क्वाड्रन कमाडर त्रोफीम के पास आया और अधेरे मे उसके पास बैठ गया।

"सो रहे हो, त्रोफीम?"

"ऊघ रहा हू।"

बुझते तारो को देखता हुआ स्क्वाड्रन कमाडर बोला

"अपने बछेडे को मार दो! ढग से लडाई नही करने देता उसे देखकर हाथ काप जाता है तलवार नही उठती। यह सब इसलिये कि वह बिल्कुल नादान है घर की याद दिलाता है और युद्ध के समय ऐसी बातो का कोई स्थान नही पत्थर का दिल भी पसीज जाता है देखो तो सही घमासान लडाई मे हरामी को किसी ने कुचला नही, टागो के बीच घूम रहा था" चुप होकर वह खयालो मे डूबा मुस्कराया, पर त्रोफीम यह मुस्कान नही देख रहा था। "जानते हो त्रोफीम, उसकी दुम पीठ पर रखकर चौकडी भरता है और दुम हूबहू लोमडी जैसी है क्या जबर्दस्त दुम है!

त्रोफीम कुछ नही बोला। बरानकोट से सिर को ढककर ओस की नमी से ठिठुरता हुआ वह आश्चर्यजनक तेजी से सो गया।

* * *

पुराने मठ और पहाडी के बीच सकरे स्थान पर दोन निरकुश वेग से बहती है। मोड पर पानी उफनता और हरी फेनिल लहरे बमत की बाढ से तट पर बिखरे खडिया के खडो को पूरे जोर से हिलाती।

अगर कज्जाको ने दोन के उस स्थान पर कब्जा न कर लिया होता जहा उसका वेग धीमा और पाट चौडा व स्वभाव शात है, और तलहटी पर वहा से गोलीबारी न शुरू की होती, तो स्क्वाड्रन कमाडर कभी भी मठ के सामने तैरकर नदी पार करने का निर्णय न लेता।

दोपहर को नदी पार करने का काम शुरू हो गया। छोटी-सी नौका पर मशीनगन से लैस बग्घी, उसके चालक और तीन घोडे चढा दिये गये। जब नौका दोन के बीचो-बीच पहुचकर प्रवाह के विपरीत

तेज़ी से मुड़कर हल्की-सी झुक गयी, तो बायी ओर जोता जानेवाला घोड़ा जिसने कभी पानी नही देखा था बिदक गया। पहाड़ी की तलहटी में, जहां स्क्वाड्रन घोड़ों की काठी-ज़ीन उतार रहा था, नौका के लकड़ी के फ़र्श पर उस घोड़े की नालों की ठकठक और व्याकुल खर्राहट साफ़-साफ़ सुनायी पड़ रही थी।

"नाव डूबो देगा!" भौंहें सिकोड़कर त्रोफीम बुदबुदाया, उसका हाथ अपनी घोड़ी की पसीने मे तर पीठ तक भी न जा पाया कि नौका में घोड़ा ज़ोर से हिनहिनाया और मशीनगनवाली बग्घी के बम को ठेलता हुआ पिछली टांगों पर खड़ा हो गया।

"गोली मार दे!.." स्क्वाड्रन कमाडर चाबुक को हाथ में मसोमते हुए चिल्लाया।

त्रोफ़ीम ने देखा कि मशीनगन चालक ने घोड़े की गर्दन पर लटककर उसके कान में पिस्तौल की नाल ठूंस दी। पटाखे की तरह गोली दगने की आवाज़ हुई, बाक़ी दोनों घोड़े सहमकर एक दूसरे से चिपक गये। मशीनगन चालकों ने नौका उलटने के डर मे, मरे घोडे को बग्घी से मटा दिया। उसकी अगली टागे धीरे-धीरे मुड़ गयी, सिर लटक गया...

कोई दमेक मिनट बाद मकरी रेती मे सबसे पहले स्क्वाड्रन कमांडर ने अपने समंद घोड़े को पानी म उतारा, उसके पीछे छप-छप करता पूरा स्क्वाड्रन पानी मे उतर गया—एक सौ आठ अधनंगे घुडसवार और इतने ही नाना रंगी घोड़े। ज़ीन-काठियां तीन डोंगियों में थी। उनमें से एक त्रोफ़ीम खे रहा था, अपनी घोड़ी उसने प्लाटून नायक नेचेपुरेन्को को सौंप दी थी। दोन के बीच पहुंचकर त्रोफीम ने देखा कि अगले घोड़े घुटने भर नदी में उतरकर अनिच्छापूर्वक पानी गटक रहे थे। घुड़सवार दबे स्वर में उन्हे हांक रहे थे। कुछ देर बाद तट से कोई पचास गज़ की दूरी पर घोड़ों के सिर ही सिर दिखायी पड़ रहे थे, फूत्कार सुनायी पड रही थी। घोडो के साथ उनकी अयाल पकड़े, रायफ़लों पर कपड़ों की पोटलियां और झोले लटकाये लाल सैनिक तैर रहे थे।

डोंगी में चप्पू पटककर त्रोफ़ीम सीधा खड़ा हो गया और धूप से आंखे मिचमिचाते हुए तैरते झुंड में अपनी घोड़ी के लाखी सिर को खोजने लगा। स्क्वाड्रन शिकारियो की गोलियों की आवाज़ मे डरकर आकाश में बिखरे जंगली हंसों की तरह लग रहा

था। आगे-आगे स्क्वाड्रन कमांडर का समंद घोड़ा अपनी चमकीली पीठ को ऊंचा उठाता तैर रहा था, उसकी पूंछ के पास सफ़ेद धब्बों की तरह उस घोड़े के कान चमक रहे थे जो कभी कमिसार का हुआ करता था। उनके पीछे काला झुंड तैर रहा था और सबसे पीछे, हर पल पिछड़ता हुआ प्लाटून नायक नेचेपुरेन्को का लटवाला सिर और उसके बायी ओर त्रोफ़ीम की घोड़ी के खड़े कान दिखायी पड़ रहे थे। आंखों पर ज़ोर डालने पर उसे बछेड़ा भी दिखायी दे गया। वह झटक-झटककर तैर रहा था, कभी वह पानी से फुदकता तो कभी सिर्फ़ उसके नथुने दिखायी देते।

और तभी दोन पर चली हवा ने त्रोफ़ीम के कानों तक मकडी के तार की तरह महीन पुकार – हि-हि-हि ऽऽ पहुंचायी।

नदी की सतह पर गूंजता उसका हृदयविदारक चीत्कार तलवार की धार की तरह पैना था। वह कोड़े की तरह त्रोफ़ीम के दिल पर पडा और उसमें अजीब-सा परिवर्तन आ गया: पांच साल उसने लड़ते-लड़ते गुज़ार दिये, कितनी बार मौत से उसकी आंखें चार हुईं, पर उस पर कोई असर नही पड़ा, लेकिन इस समय ललछौंही दाढीवाले चेहरे का रंग उड़ गया, धूसर-नीला पड़ गया – और चप्पू संभालकर उसने बहाव से उलटी दिशा में, उस ओर नाव मोड़ दी जहा भवर में निढाल बछेड़ा घूम रहा था और उससे कोई बीस-एक गज़ की दूरी पर नेचेपुरेन्को, भंवर की ओर हिनहिनाकर तैरती मां को रोकने के लिये पूरा ज़ोर लगा रहा था। त्रोफ़ीम का मित्र स्तेश्का येफ़ेमोव जो नाव में काठियों के ढेर पर बैठा था सख़्ती से चिल्लाया:

"पागल मत बन! किनारे की तरफ़ मोड़! देखता नही, वहा कज़्ज़ाक है!.."

"मार दूंगा!" त्रोफ़ीम सांस छोड़कर बोला और उसने पेटी से पकडकर रायफ़ल पास खीची।

नदी का बहाव बछेड़े को उस स्थान से दूर ले गया, जहा से स्क्वाड्रन ने नदी पार की थी। छोटा-सा भंवर, हरी लहरों की जिह्वाओं से चाटता उसे धीरे-धीरे घुमा रहा था। त्रोफ़ीम ज़ोर-ज़ोर से चप्पू चला रहा था, नाव छलांगें-सी लगाती चल रही थी। दायें तट पर बीहड़ से कज़्ज़ाक दौड़ते निकले। मशीनगन ज़ोर-ज़ोर से तड़-तड़ करने लगी। पानी में गिरती गोलियां सूं-सूं कर रही थीं। किरमिच की

फटी क़मीज़ पहने अफ़सर पिस्तौल हिलाता हुआ कुछ चिल्ला रहा था।

बछेड़ा अब कभी-कभी हिनहिनाता, उसका करुण चीत्कार धीमा हो गया। उसका यह चीत्कार किसी बच्चे की चीख़ से इतना मिलता था कि रोम-रोम सिहर उठता। नेचेपुरेन्को ने घोड़ी को छोड़ दिया और बायें तट की ओर तैर चला। कांपते हाथों से त्रोफ़ीम ने रायफ़ल उठायी, भंवर में फंसे सिर के नीचे का निशाना लगाकर गोली चला दी, फिर उसने झटके से बूट उतार दिये और हाथ फैलाकर दबी-सी हुंकार करके पानी में कूद गया।

बायें तट पर किरमिच की क़मीज़ पहने अफ़सर दहाड़ा:

"गोली चलाना बंद करो!"

पांच मिनट बाद त्रोफ़ीम बछेड़े के पास था, बायां हाथ ठंडे पेट के नीचे डालकर उसने बछेड़े को पकड़ लिया, और नाक-मुंह में पानी भरने के कारण ज़ोर-ज़ोर से हिचकियां लेता बायें तट की ओर तैर पड़ा। दायें तट से एक भी गोली नहीं चली।

आकाश, वन, रेत – सब चटख हरे, मायावी लग रहे थे। शक्ति बटोरकर बचा-खुचा ज़ोर लगाया – और त्रोफ़ीम ने अपने पांवों तले ज़मीन महसूस की। उसने घसीटकर बछेड़े की लिसलिसी काया को रेत पर खींचा और सुबकियां लेता हरे पानी की उलटियां करता रेत को टटोलने लगा... जंगल से नदी पार कर चुके स्क्वाड्रन के सैनिकों की आवाज़ों का कोलाहल गूंज रहा था, रेती के पीछे कहीं तोपें दगने की कांपती गरज सुनाई पड़ रही थी। लाल घोड़ी बदन से पानी झाड़ती और बछेड़े को चाटती त्रोफ़ीम के पास खड़ी थी। उसकी लटकी पूंछ से रेत में पानी की इंद्रधनुषी धारा टपक रही थी।...

त्रोफ़ीम लड़खड़ाता हुआ खड़ा हुआ, रेत पर दो पग रखे और उछलकर बग़ल पर गिर पड़ा। मानो सीने में गर्म सुआ घुस गया; गिरते समय उसे गोली की आवाज़ सुनायी पड़ी। पीठ में इकलौती गोली लगी – दायें तट से चली। दायें तट पर किरमिच की फटी क़मीज़ पहने अफ़सर ने धुआं छोड़ते कारतूस को फेंकने के लिये उदासीनतापूर्वक कारबाइन का बोल्ट उतारा। उधर रेत पर बछेड़े से दो क़दम की दूरी पर त्रोफ़ीम दम तोड़ रहा था और उसके कड़े नीले होंठों पर, जिन्होंने पांच साल से अपने बच्चों को न चूमा था, मुस्कान और ख़ून के बुलबुले फूट रहे थे।